प्रिसन मिनिस्ट्री रविवार

ख्रीस्त में मेरे प्यारे भाइयों और बहनों

17 मार्च 1887 अमेरिका के न्यूर्योक में मेरी रिगोल्ट नाम की महिला उस की नौकरानी और उस की बेटी की गला काट कर बेरहमी से हत्या कर दी गई। दो हफ्ते के अन्दर प्रान्जीली नाम के आरोपी को गिरफ्तार किया जिस ने गहनों की चोरी के लिए हत्या की थी। प्रान्जीली को तीन हत्या के आरोप में फॅासी की सजा दी गई। लिसीयु की संत तेरेसा मात्र चौदह वर्ष की थी उन्हें आभास हुआ की प्रान्जीली प्रायश्चित किए बिना ही मर जायेगा जिस से उस की आत्मा भी नरकाग्नि में नष्ट हो जायेगी। संत तेरेसा को कुछ करने का प्रोत्साहन हुआ, उन्होने परमपिता परमेश्वर को उनके पुत्र प्रभु येसु के सभी दुखों, कष्टों और उन के फलों को चढ़ाते हुए प्रान्जीली के मन परिर्वतन के लिए प्रार्थना किया। 1 अक्टूबर 1887 को संत तेरेसा ने अखबार में पढ़ा कि फॉसी में लटकने से पहले प्रान्जीली ने अंतिम प्रार्थना कराने आये पुरोहित के हाथ से क्रूस ले कर येसु के पवित्र घाव को तीन बार चुम्बन किया, उसे अपने किए गलति पर पछतावा हो चुका था। लूकस 15 : 7 कहता है कि एक पश्चातापी पापी के लिए स्वर्ग में अधिक आनंद मनाया जायेगा।

संत तेरेसा की तरह हर विश्वासी का कर्तव्य है कि हम कैदियों की आत्माओं को नष्ट होने से बचायें। क्या आप ने कभी कैदियों के दुख के बारे में सोचा है? उनके अकेलापन, निराशा, अत्याचार, असहायतापन आदि के बारे में क्या आपने कभी उनके लिए प्रार्थना किया है? उनसे मिले हैं या उनके लिए स्वांत्वना भरा पत्र लिखा है? इन्ही सभी दायित्वों की याद दिलाने काथलिक कलीसिया अगस्त माह के दूसरे रविवार को कैदियों और उनकी सेवा करने वालों के लिए प्रार्थना करने के लिए समर्पित करती है। एक सर्वे के अनुसार दुनिया भर में करीब एक करोड सात लाख तिरालीस हजार छः सौ उन्नीस कैदी हैं जिस में से करीब चार लाख उन्नीस हजार छः सौ तेइस भारत में हैं। उनके लिए प्रार्थना करना और

मिलने जाना हमारा दायित्व है क्योंकि वे भी हमारी ही तरह ईश्वर के प्रतिरुप में बनाये गये हैं।

भारत में बंदियों का सेवा कार्य

आप सभी को इस सेवा कार्य में मार्गदशर्न देने के लिए प्रिसन मिनिस्टरी इंडिया नाम की स्वयं सेवी संस्था है जो कैदियों और उनके परिवारों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करती है। यह संस्था भारतीय काथलिक बिशप्स संगठन के अंतर्गत न्याय –शांति और विकास कम्मीशन का अंग है। इस संगठन के स्वयं सेवी नियमित रुप से जेल स्टाफ और कैदियों के संपर्क में रहते हैं। हर धर्मप्रांत में इस संगठन की शाखा है जिस का नेतृत्व एक पुरोहित के द्वारा किया जाता है। अधिकतर मेजर सेमिनारियों में ब्रदरगण इस सेवाकार्य के लिए प्रार्थना और अन्य सेवा कार्य करते हैं। PMI के अंर्तगत भारत के अलग अलग राज्यों में 30 पुर्नवास केंद्र है जहाँ पर जेल से रिहा कैदी आकर अपने जीवन को नये सिरे से आरंभ करने के लिए सहायता प्राप्त कर सकते हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि बहुत से धर्मसंघीय संस्थाएं इस सेवा कार्य में अपना सहयोग दे रही हैं जिन के हम आभारी है। साथ ही साथ मैं सभी लोकधर्मी विश्वासियों से आग्रह करना चाहता हूँ कि वे भी अपने – अपने पल्ली के माध्यम से इस सेवा कार्य के लिए आगे आये और सहयोग दें व स्वर्ग के लिए राह बनायें। प्रभु ने दाहिने हाथ के धर्मियों से कहा आओ और स्वर्ग राज्य के अधिकारी बनों मैं बंदी था और तुम मुझ से मिलने आये मत्ती 25 : 34 – 36, जो कुछ तुमने मेरे छोटे भाइयों में किसी के लिए किया वह तुम ने मेरे लिये किया। मत्ती 25 : 40 ।

जेल एक ऐसी जगह है जहाँ सुधार के मकसद से न्यायिक व्यवस्था द्वारा अपराधियों को रखा जाता है। हम जेल और कैदियों को पसंद नहीं करते परंतु प्रभु येसु ऐसे नहीं थे। वे पापियों, नाकेदारों, वेश्याओं और कैदियों को प्यार करते थे। उन्होने अपने सार्वजनिक जीवन के आरंभ में कहा प्रभु का आत्मा मुझ पर छाया रहता है उस ने मेरा अभिषेक किया जिस से मैं बंदियों को मुक्ति का संदेश सुनाऊँ।

इस प्रिसन मिनिस्ट्री के लिए हमारा विषय है "दीवाल जेल नहीं बनाते" यह शीर्षक रिचार्ड लोवेन्स की कविता से लिया गया है। यह कविता उन ने तब लिखी जब वे जेल में बंदी थे । उन के अनुसार जेल की दिवारें भले ही उन के चलने फिरने को सीमित कर दें लेकिन यदि आप अपने विचारों को स्वतंत्र रखें, वह करें जो आप चाहें, जिन्हें चाहें मन से प्यार करें तो यह वास्तव में कैद नहीं बल्कि वह एक आश्रम या मठ की तरह बन जाता है जहाँ कैदी स्वयं को समझ सकते और बदल सकते हैं। प्रभु के लिये कुछ भी असंभव नहीं लूकस 1 : 37

लियू जियाबु का जीवन हमारे शीर्षक को सार्थक करता है। उन्हें चीन का नेल्सन मण्डेला कहा जाता है। वे मानवाधिकार कार्यकर्ता, साहित्यकार, आलोचक थे, और उन्हें चीन में राजनैतिक सुधारक कहा जाता है। 2010 में सबसे लंबे समय तक अहिंसात्मक राजनैतिक संघर्ष के लिये शांति के नोबेल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि विचारों की स्वतंत्रता समस्त मौलिक अधिकारों की नीव, मानवता का स्रोत और सच्चाई की जननी है। उन्होने महात्मा गांधी की तरह सारे अत्याचारो का सामना प्यार और अहिंसा से किया।

पापा फ्रांसिस ने एक बार किशोरों के लिए आयोजित प्रायश्चित प्रार्थना सभा में कहा कि समाज पापियों और अपराधियों के लिये अदृश्य दीवार बना देती है। उन्होंने कहा कि हम दीवार नही बल्कि सेतु का निर्माण करें और बुराई पर अच्छाई से विजय प्राप्त करें गल्तियों पर क्षमा से और सभी से शांति के साथ रहे। दुनियां से मौत की सजा को समाप्त करने के लिए हम पापा फ्रांसिस का साथ दें क्योंकि मृत्युदण्ड मानवता के विरुद्ध पाप है।

दीवार रहित जेल

दीवार रहित जेल भारत देश की एक अच्छी पहल है जहाँ चयनित कैदियों को खुले परिसर में रखकर जायज तरीके से जीवन यापन के लिये तैयार किया जाता है। इस प्रकार के कैद में अपराधी कानून का अधिक सम्मान करना और अनुशासित जीवन जीना सीखते हैं।

उपसंहार

प्रिसन रविवार के द्वारा कलीसिया भारत के 1401 जेलों में बंद सभी कैदियों को विश्वास दिलाना चाहती है कि दिवार जेल नहीं बनाती, परंतु हमारे विचार, हमारी दृष्टिकोण, ईश्वर की योजना को समझना यह महत्वपूर्ण है। हम आपके साथ हैं आपके लिए प्रार्थना करते हैं और आप के सहयोग के लिये तत्पर हैं। ईश्वर आप का शरण है और वह आपके जीवन का पुनः उद्धार करेगा। प्रिय भाइयो और बहनों जेल के बाहर हम अपने कैदी भाई बहनों की आवाज सुंने और उनकी हर संभव सहायता करें। प्रिसन मिनिस्ट्री इंडिया के संरक्षक संत मैक्समिल्यिम कॉलबे और माता मरियम आपकी सहायता करे।

sd/-

बिषप आल्विन डि सिल्वा
चेयरमान, प्रिसन मिनिस्ट्री इंडिया

N.B. This Pastoral Letter is to be read out and explained to the faithful during the Holy Mass on11th August 2019 in all churches and institutions where there is Sunday Mass for the public.